भगवतिक प्रति आत्म निवेदन अछि , हे माँ असुर जे भयकारी अछि ओकर सुमतिक वर दिओ जे ओ अपन असुर विति कें त्यागि सुर सेवक बनैथ । हे माता अहाँ त दश महाविधा दात्रि थिकहूँ । सभक कल्यान करिऔ ।

वासर रैन शवासन शोभित

चरन चंद्रमनि चुरा।

कतओक दैत्य मारि मुख मेलल

कतओ उगिलि कैल कूरा।।

हे माता दिन-रति अहाँ शिवक शव पर शोभित भ रहल छी, ओहि शव कें मस्तक पर चंद्रमा शोभित अछि जे अहाँक चरनक समीप अछि। अहाँ असंख्य दैत्य कें मारि ओकर रक्तसँ कूरा क कें उगिलि देल , लहुसँ मुख लाल भेल अछि। सुर आ असुरमे अहाँ असली अन्तर कें बुझा देलहुँ।

सामर बरन नयन अनुरंजित

जलद योग फुल कोका।

कट-कट बिकट फुट पाँरि

लिधुर फेन उठ फोंका॥

हे भगवती अहाँ रुप सामर (कारी) अछि जाहिमे आँखि रक्तरंजित अछि । ओ ओहिना लगैत अछि जेना कारी - मेघमे लाल कमल फूल उगल हो । असुर पर क्रोधमे अहाँकें दाँत कट- कट करैत अछि ओठ लाल पारि फूल लगैत अछि । मुहँ सँ लाल शोनित फेनाएल बहैत अछि जेना लाल फोंका होइक । हे श्यामे अहाँ क्रोधावस्थाक रुप विकट अछि।

Scanned by CamScanner

PART – 1

प्रश्न 1 महाकवि विधापति रचित "गोसाउनिक गीत " के भावार्थ लिखु ।

मैथिली सहित्यक ई विशाल प्रसाद ज कोनो एकट। स्तम्भ पर अछि त ओ निस्सन्देह विधापति थिकाह मैथिलि सहित्यक एहि विशाल जे सीर समस गहीर धरि गेल अछि , तकर नाम विधापति थिक । जँ विधापतिरुपी सूर्यक आविर्भाव काव्य-गगन मे नहि भेल रहैत तँ रात्रिक व्याप्ति आर कतैक सय वर्श भ जाइत , से के कहि सकैछ वस्तुतः ई कविकोलिक काकलीएक प्रभाव छल जे मैथिली कव्योपवन में वसन्तक सामाज्य व्याप्त भ गेल ।भीमनाथ झाक ई उक्ति विधापतिक प्रसन्ग शत- प्रतिशत सटीक अछि ।

विधापतिक जन्मक प्रस्नग अनेक विदवान मत अछि ।मुदा ई तय भ गेल अछि जे हिनक जन्म विस्फि ग्राम मे चौदहम शताब्दी मे भेल छलनि । " विधापतिक आयु अवसान, कातिक धवल त्रयोदशि जान। " एही आधार प्र पर विधापति स्मरिति पर्वक आयोजन के कएल जाइत अछि

विधापति संस्क्रितिक विधन छलाह ।किंतु हिनका अवहट्ट आ दैसिल वयना अर्थात मैथिली पर सेहो पूरा अधिकार छलनि ।तकरे परिनाम थिक जे संस्क्रित मे दर्जानाधिक्य पोशाक अतिरिक्त अवहट्ट मे कीर्तिकलता ओ कीर्तिपताका आ मैथिली मे सिंगार भक्तिक पदक प्राचूर्य भेटैक अछि।

मिथिलामे प्रायः सभी शुभ कार्य कें प्रारम्भ करबासँ पूर्व कुल - देवी-देवताक पूजा- अर्चना कयल जाइछ । महाकवि विधापति ओहि कुल देविक अर्चनामे गीतक रचना देशी भाशामे कैलन्हि ।ओ वंदन गीत अछि -

जय जय भैरवि असुर भयाउनि।

पशुपति भमिनि माया।

सहज सुमति व वर दिअ हे गोसाउनि।

अनुगत गति तुअ पाया।

Scanned by CamScanner